भजन

तर्ज– ये माना मेरी जान मोहब्बत सजा है

उतरते अर्श से यूं हक ने कहा था,रूहों मेरी न हमें भूल जाना
न भूलने का वादा किया था,देखो आजमाए के हमने कहा था

1– भेजूंगा रूह अपनी तुमको बुलाने को
याद करना वायदा किया संग हमारे जो
लेके दौड़ो इश्क है हमने बुलाया
रूहों मेरी न हमें भूल

2– खातिर तुम्हारी रुहो मैं भी उत आऊंगा
देह धर माफक तुमको जगाऊंगा
कहोगे कौन हैं ये कहां से है आया
रूहों मेरी न हमें भूल

3– माना माया छलवाली तुमको भुलाती
मेहर मेरी तुमको पल पल जगाती
जाग के रूहों तुम न फिर सो जाना
रूहों मेरी न हमें भूल

4– खातिर तुम्हारी रूहों बार बार आए
देने पहचान अपनी वाणी भी लाये
ये न कहना नं किसी ने बताया
रूहो मेरी न हमें भूल